Padma Bhushan

SHRI PANKAJ KESHUBHAI UDHAS (POSTHUMOUS)

Shri Pankaj Keshubhai Udhas, known as the *Velvet Voice of India,* was not just a ghazal singer but a musical institution and a bridge between tradition and modernity.

2. Born on 17th May, 1951, in Jetpur, Gujarat, Shri Udhas grew up in a home filled with poetry and melodies. Though he had no formal classical training, his dedication and passion for music shaped him into one of the most revered voices of his time. His breakthrough came with *Chitthi Aayi Hai* from the 1986 film *Naam,* a song that continues to resonate with millions of fans worldwide. Throughout his career, he delivered timeless hits, such as *Ghungroo Toot Gaye, Aur Ahista Kijiye Baatein,* and *Jeeye To Jeeye Kaise,* each capturing the depth and emotion of ghazals.

3. Shri Udhas' influence transcended borders, taking Indian music to global heights. He performed at some of the world's most prestigious venues, including the Royal Albert Hall, Madison Square Garden, the Sydney Opera House, and the 02 Arena. His concerts were not just performances but *spiritual and poetic experiences,* allowing audiences to connect deeply with the emotions conveyed through his ghazals. His ability to blend melody with heartfelt poetry earned him admiration across cultures, solidifying his role as a global ambassador of the ghazal genre. In 2022, he released his final ghazal album, *Forever Ghalib,* at the sold-out Sydney Opera House, reaffirming his enduring popularity and legacy. His contribution to the world of music was unparalleled, and he played a pivotal role in keeping the tradition of ghazals alive.

4. Beyond his musical career, Shri Udhas was also deeply committed to philanthropy. In 2002, he co-founded Khazana — A Festival of Ghazals, a charitable event that raised funds for cancer and thalassemia patients. He was actively involved with the Cancer Patients Aid Association (CPAA), extending support to those battling the disease. As the president of the Parents Association Thalassemic Unit Trust (PATUT) for over 40 years, he worked tirelessly toward a thalassemia-free India, facilitating over 740 bone marrow transplants for children. His humanitarian efforts, combined with his musical genius, have left an everlasting impact on society, ensuring that his legacy continues to inspire and uplift future generations.

5. Throughout his career, Shri Udhas was embellished with numerous accolades, recognizing his exceptional contributions to music. He was honoured with the K L Saigal Award as the Best Ghazal Singer of the Year in 1985; Indira Gandhi Priyadarshani Award for his remarkable contributions to music in 1996; Dadabhai Naoroji Millennium Award, conferred by the Dadabhai Naroji International Society and the MTV Immies Award for Best Ghazal Album in 2003. His exceptional artistry was further recognized in 2006 when he was bestowed with the Padma Shri. In 2023, he was felicitated with the Master Dinanath Mangeshkar Award and the Sangeet Natak Akademi Award, both celebrating his outstanding contributions to Indian music.

6. Shri Udhas passed away on 26th February, 2024.

श्री पंकज केशुभाई उधास (मरणोपरांत)

भारत के मनमोहक स्वर के रूप में विख्यात श्री पंकज केशुभाई उधास न केवल एक गजल गायक थे बल्कि एक संगीत संस्थान और परंपरा एवं आधुनिकता के बीच एक कड़ी थे।

2. 17 मई, 1951 को गुजरात के जेतपुर में जन्मे, श्री उधास काव्य और स्वर–माधुर्य से परिपूर्ण परिवार में पले–बढ़े। हालांकि, उन्होंने कोई औपचारिक शास्त्रीय प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था, परंतु संगीत के प्रति उनके समर्पण और लगन ने उन्हें अपने समय के सबसे सम्मानित गायकों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया। उन्हें पहली सफलता वर्ष 1986 की फिल्म नाम के गीत चिट्ठी आई है, के साथ मिली जो दुनिया भर में लाखों प्रशंसकों के बीच गूंजता रहता है। अपने पूरे करियर के दौरान, उन्होंने घुंघरू टूट गए,और अहिस्ता कीजिये बातें, और जीएं तो जीएं कैसे जैसे कालातीत हिट गीत पेश किए, जिनमें से प्रत्येक गीत में ग़ज़लों की गहराई और भावना समाहित थी।

3. श्री उधास का प्रभाव सीमाओं से परे था, जिसने भारतीय संगीत को वैश्विक ऊंचाइयों पर पहुंचाया। उन्होंने रॉयल अल्बर्ट हॉल, मैडिसन स्क्वायर गार्डन, सिडनी ओपेरा हाउस और 02 एरिना सहित दुनिया के कुछ सबसे प्रतिष्ठित स्थानों पर प्रदर्शन किया। उनके संगीत कार्यक्रम केवल प्रदर्शन नहीं थे, बल्कि आध्यात्मिक और काव्यात्मक अनुभव थे, जिससे श्रोता उनकी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त की गई भावनाओं से गहराई से जुड़ पाते थे। मधुरता को दिल को छू लेने वाली कविता के साथ मिलाने की उनकी क्षमता ने उन्हें विभिन्न संस्कृतियों में प्रशंसा दिलाई, जिससे ग़ज़ल शैली के वैश्विक राजदूत के रूप में उनकी भूमिका मजबूत हुई। वर्ष 2022 में, उन्होंने अपना अंतिम ग़ज़ल एल्बम, फॉरएवर ग़ालिब, बिक चुके सिडनी ओपेरा हाउस में रिलीज़ किया, जिसने उनकी स्थायी लोकप्रियता और विरासत की पुष्टि की। संगीत की दुनिया में उनका योगदान अद्वितीय था, और उन्होंने ग़ज़ल की परंपरा को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

4. अपने संगीत करियर के अलावा, श्री उधास परोपकार के प्रति भी हृदय से प्रतिबद्ध थे। वर्ष 2002 में, उन्होंने खजाना– ए फेस्टिवल ऑफ़ ग़ज़ल की सह–स्थापना की, जो एक धर्मार्थ कार्यक्रम था, जिसने कैंसर और थैलेसीमिया रोगियों के लिए धन जुटाया। वे कैंसर की बीमारी से जूझ रहे लोगों को सहायता देने वाली कैंसर रोगी सहायता संघ (सीसीपीए) के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। 40 से भी अधिक वर्षों तक पैरेंट्स एसोसिएशन थैलेसीमिक यूनिट ट्रस्ट (पीएटीयूटी) के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने थैलेसीमिया मुक्त भारत की दिशा में अथक प्रयास किया, बच्चों के लिए 740 से अधिक अस्थि–मज्जा प्रत्यारोपण की सुविधा उपलब्ध कराई। उनके मानवीय प्रयासों ने, उनकी संगीत प्रतिभा के साथ मिलकर, समाज पर यह सुनिश्चित करते हुए एक चिरस्थायी प्रभाव छोड़ा है कि उनकी विरासत भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित और उत्थान करती रहे।

5. अपने करियर के दौरान, श्री उधास को संगीत में उनके असाधारण योगदान को सम्मान देते हुए कई पुरस्कारों से अलंकृत किया गया। उन्हें वर्ष 1985 में वर्ष के सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ल गायक के रूप में के.एल. सहगल पुरस्कार से सम्मानित किया गया; वर्ष1996 में संगीत में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए इंदिरा गांधी प्रियदर्शनी पुरस्कार; दादाभाई नौरोजी इंटरनेशनल सोसाइटी द्वारा प्रदान किया गया दादाभाई नौरोजी मिलेनियम पुरस्कार और वर्ष 2003 में सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ल एल्बम के लिए एमटीवी इमीज़ पुरस्कार। उनकी असाधारण कलात्मकता को वर्ष 2006 में और सम्मान मिला जब उन्हें पद्म श्री से अलंकृत किया गया। वर्ष 2023 में, उन्हें मास्टर दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, दोनों ही भारतीय संगीत में उनके उत्कृष्ट योगदान का स्मरण करते हैं।

6. 26 फरवरी, 2024 को श्री उधास का निधन हो गया ।